ग्वालियर | पकड़ा गया पति-पत्नी का इंटरस्टेट चोर गिरोह

एक और बंटी बबली

demo pic.

ग्वालियर शहर की महाराजपुरा थाना पुलिस की रातों की नींद हराम करने वाला एक साया आखिरकार पकड़ा गया। यह कोई अकेला शातिर अपराधी नहीं था, बल्कि एक पति-पत्नी की जोड़ी थी, जिसने अपनी फिल्मी अंदाज में चोरी की वारदातों को अंजाम देकर तीन राज्यों की पुलिस की नाक में दम कर रखा था। यह जोड़ी बॉलीवुड फिल्म 'बंटी-बबली' की कहानी से कम नहीं थी, जहां पति चोरी करता था और पत्नी उसे अंजाम देने में मदद करती थी।

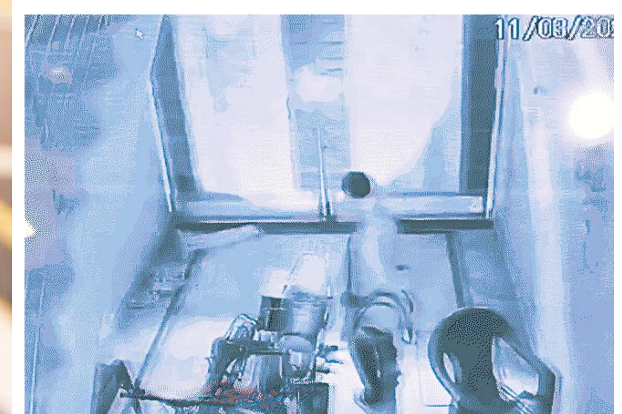

चोरी के दौरान सीसीटीवी में कैद आरोपी

ज्योति रजक अरविंद रजक

पिछले कुछ महीनों से ग्वालियर के महाराजपुरा इलाके में चोरी की घटनाओं ने तेजी पकड़ ली थी। एक के बाद एक हो रही छह वारदातों ने न सिर्फ नागरिकों के मन में दहशत पैदा कर दी थी, बल्कि पुलिस पर भी सवाल खड़े होने लगे थे। हर घटना का अंदाज एक जैसा था। दिन में रेकी, रात के अंधेरे में खाली घर को निशाना, ताला तोड़कर अंदर घुसना और अलमारी से गहने व नकदी पर हाथ साफ करना।

पुलिस के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि चोर किसी भी तरह का सुराग नहीं छोड़ते थे। महाराजपुरा थाना प्रभारी और एएसपी विदिता डागर के नेतृत्व में गठित टीम ने जब सीसीटीवी फुटेज खंगालना शुरू किया, तो एक नई पहेली सामने आई। हर वारदात के फुटेज में चोर अलग-अलग बाइक और अलग-अलग रूट का इस्तेमाल करते दिख रहे थे। कभी एक बाइक पर दो लोग, तो कभी दूसरी पर। इससे भ्रम था कि क्या यह एक ही गिरोह है या कई अलग-अलग चोर सक्रिय हैं। जैसे-जैसे पुलिस की जांच गहरी होती गई, चोरों की शातिराना प्लानिंग के तार खुलते गए। यह गिरोह कोई आम नहीं था। गिरफ्त में आए आरोपी अरविंद रजक ने पूछताछ में बताया कि वे पुलिस को भ्रमित करने के लिए तीन अलग-अलग बाइक का इस्तेमाल करते थे। पहले वे एक चोरी की बाइक से इलाके की रेकी करते थे। लक्ष्य तय होने के बाद, वारदात को अंजाम देने के लिए दूसरी बाइक का इस्तेमाल करते थे। घटना को अंजाम देने के बाद, उस बाइक को कुछ दूरी पर छोड़कर तीसरी बाइक से फरार हो जाते थे। सीसीटीवी में हर बार अलग-अलग नंबर की बाइकें दिखती थीं, जिससे पुलिस एक ही रास्ते पर फोकस नहीं कर पा रही थी। यह पति-पत्नी की जोड़ी बेहद सतर्क थी और सुनिश्चित करती थी कि कोई भी सुराग उन तक न पहुंचे।

जांच करती पुलिस

आरोपियों का तरीका बेहद साफ था। वे दिन के उजाले में सूने मकानों की रेकी करते थे। यह पता लगाना उनका काम था कि किस घर में लोग दिन में बाहर जाते हैं और किस घर में लंबे समय से कोई नहीं रहता। एक बार लक्ष्य तय होने के बाद, वे रात के अंधेरे का इंतजार करते थे। रात करीब 12 से 3 बजे के बीच, जब इलाका सन्नाटे में डूब जाता था, ये लोग सक्रिय हो जाते थे।

अरविंद चोरी करने में माहिर था। वह ताला तोड़ने से लेकर आलमारी को खोलने तक की कला में पारंगत था। उसका फोकस सिर्फ सोने-चांदी के गहनों और नकदी पर होता था। अन्य कीमती सामान या इलेक्ट्रॉनिक्स से उन्हें कोई लेना-देना नहीं था, क्योंकि उन्हें खपा

इस जोड़ी की सबसे बड़ी ताकत थी, पत्नी ज्योति का साथ। अरविंद जहां चोरी करता था, वहीं ज्योति उसकी सहायक थी। वारदात के वक्त ज्योति बाहर निगरानी रखती थी और अरविंद के हाथ-पैर साफ करने के बाद दोनों एक साथ बाइक पर सवार होकर निकल जाते थे। पुलिस चेकिंग के दौरान यह जोड़ी कई बार बिना रोके निकल गई। इसकी वजह थी कि पुलिसकर्मी आमतौर पर अकेले या दो युवकों को बाइक पर देखकर रोकते थे, लेकिन जब एक महिला पीछे बैठी होती थी, तो चेकिंग ढीली हो जाती थी। ज्योति इस मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझती थी। कई बार तो वह अरविंद के साथ बिना हेलमेट के भी चली जाती थी, और पुलिस को यह अंदाजा भी नहीं होता था कि यह शातिर अपराधी हैं। शेष पृष्ठ 7 पर...

शक न हो इसलिए बिना लक्जरी के अलग-अलग रहते थे पति-पत्नी

जांच में सामने आया है कि अरविंद रजक मूल रूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। उस पर पहले से दर्ज 56 मामले बताते हैं कि यह उसका पेशा बन चुका था। वह चोरी को एक कला की तरह अंजाम देता था। ज्योति से उसकी शादी के बाद, उसने अपनी पत्नी को भी इस धंधे में शामिल कर लिया। शुरुआत में ज्योति ने विरोध किया होगा, लेकिन बाद में वह भी इस फिल्मी अंदाज की जिंदगी का हिस्सा बन गई। पुलिस के अनुसार, यह जोड़ी बड़ी ही शातिराना तरीके से काम करती थी। वे एक ही परिवार के सदस्य होते हुए भी अलग-अलग ठिकानों पर रहते थे, ताकि पुलिस को एक साथ शक न हो। उनके पास महंगे फोन और वाहन नहीं थे, क्योंकि वे जानते थे कि इससे उनकी पहचान हो सकती है। उनकी पूरी जिंदगी इसी गुमनामी के इर्द-गिर्द घूमती थी।

पुलिस तलाश रही चोरी का माल खरीदने वालों को

दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। पुलिस अब उनके नेटवर्क के अन्य सदस्यों और चोरी के माल को खरीदने वाले सुनारों व व्यापारियों की तलाश कर रही है।

विदिता डागर एएसपी

विदिता डागर एएसपी

सत्यकथा

नर्मदापुरम : असम से हैदराबाद में नौकरी कर रही शबनम की लिव-इन पार्टनर से नर्मदापुरम में लाकर की हत्या

कल का होशंगाबाद और आज का नर्मदापुरम जिला एक ऐसे खौफनाक कांड की चर्चा से गूंज रहा है जिसने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है। एक युवती शबनम के साथ प्यार, धोखा, साजिश और हत्या की ऐसी दास्तान जिसे सुनकर हर कोई सकते में है। शबनम असम से हजारों किलोमीटर दूर तेलंगाना आकर अपना भविष्य संवारने में लगी थी लेकिन एक ऐसे शख्स के भरोसे ने उसे मौत के घाट उतार दिया, जिसके साथ शबनम अपनी जिंदगी बसाना चाहती थी।

असम टू नर्मदापुरम वाया हैदराबाद

demo pic.

25 फरवरी 2026 की सुबह जब सीहोर जिले के भैरुन्दा थाना क्षेत्र में अम्बर नदी के पुल के नीचे ग्रामीणों ने एक युवती का शव देखा, तो किसी को अंदाजा नहीं था कि ये शव किसी बड़ी साजिश की तरफ इशारा कर रहा है। शव की हालत ऐसी थी कि पहचान कर पाना मुश्किल था। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को बरामद तो कर लिया, लेकिन शिनाख्त न हो पाने की वजह से मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी। शव की पहचान न हो तो पुलिस के लिए सच्चाई तक पहुंचना कठिन होता है। इसलिए यह मामला धीरे-धीरे एक जटिल हत्याकांड का रूप लेता गया, जिसकी गूंज आगे जाकर नर्मदापुरम से लेकर तेलंगाना और असम तक सुनाई दी।

असम के लखीमपुर जिले की 32 वर्षीय शबनम (बदला नाम) का बचपन से ही सपना था कि वो अपने पैरों पर खड़ी हो और अपने परिवार का नाम रोशन करे। लखीमपुर असम का एक ऐसा जिला है जो ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा है और यहां की संस्कृति अपने आप में अनूठी है। शबनम के पिता एक छोटे से व्यवसायी थे और मां गृहणी। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक थी, लेकिन शबनम ने अपनी मेहनत से वह मुकाम हासिल किया जो उसके गांव की कई लड़कियों के लिए मिसाल बन सकता था।

शबनम ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई लखीमपुर से की और फिर उच्च शिक्षा के लिए गुवाहाटी चली गई। वहां से उसने कंप्यूटर एप्लीकेशन में मास्टर्स किया था। पढ़ाई पूरी होने के बाद उसने नौकरी की तलाश शुरू की और उसे तेलंगाना के हैदराबाद में एक प्राइवेट कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गई। ये उसकी जिंदगी का वो दौर था जब उसे लगा कि अब सब कुछ ठीक हो रहा है। वो अपने परिवार के लिए कमा रही थी, अपनी दो छोटी बहनों की पढ़ाई का खर्च उठा रही थी और घर की आर्थिक मदद कर रही थी।

हर लड़की की तरह शबनम की भी एक और बड़ी ख्वाहिश थी कि उसका जीवनसाथी स्वभाव से अच्छा और उसे खूब प्यार करने वाला हो। वो चाहती थी कि उसकी शादी किसी ऐसे शख्स से हो जो उसे समझे, उसके सपनों को साकार करने में मदद करे। लेकिन नियति को तो कुछ और ही मंजूर था।

हैदराबाद के साइबराबाद इलाके में शबनम जिस प्राइवेट कंपनी में काम करती थी, वहां उसकी मुलाकात नितेश यादव से हुई। नितेश नर्मदापुरम जिले के माखननगर थाना क्षेत्र के आरी गांव का रहने वाला था। वो भी उसी कंपनी में काम करता था। दोनों की मुलाकात कंपनी के एक प्रोजेक्ट के दौरान हुई और धीरे-धीरे उनकी दोस्ती बढ़ती गई।

नितेश यादव एक साधारण परिवार से था। उसके पिता खेती-बाड़ी करते थे और परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। नितेश ने अपनी मेहनत से पढ़ाई की थी और नौकरी के लिए हैदराबाद आया था। वो बातों-बातों में शबनम को अपनी तरफ खींचने में कामयाब हो गया। दोनों ने एक-दूसरे के साथ वक्त बिताना शुरू कर दिया और जल्द ही ये दोस्ती प्यार में बदल गई। हैदराबाद में न तो शबनम पर नजर रखने वाला कोई था और न नितेश पर। उम्र भी ऐसी थी जो बहुत कुछ मांग करती है। इसलिए दोनों नजदीक आते गए। करीब एक साल तक दोनों ने एक-दूसरे को जाना-समझा और फिर उन्होंने लिव-इन रिलेशनशिप में रहने का फैसला किया। शबनम को लगा कि अब उसकी जिंदगी में सब कुछ सेट हो गया है। उसने नितेश के साथ रहना शुरू कर दिया। शेष पृष्ठ 4 पर...

रतलाम

शादी में शामिल होने गई नाबालिग की बलात्कार के बाद हत्या

एक की शादी एक की बर्बादी

"शादी में शामिल होने गई नाबालिग सीमा को कहां मालूम था कि गांव के रिश्तेदार की बेटी की शादी उसकी बर्बादी का कारण बन जाएगी। शादी की चहल-पहल का फायदा उठाकर तीन युवकों ने न केवल उसके साथ बलात्कार किया बल्कि पकड़े जाने के डर से उसकी हत्या भी कर दी।

जांच करी पुलिस

फरवरी की विदा लेती ठंड में रतलाम जिले के एक छोटे से गांव के एक परिवार में शादी की चहल-पहल में पूरा गांव शामिल था। यह थाना सरवन थाने की सीमा में बसा है। लेकिन इसी शादी की रात एक ऐसी वारदात हुई जिसने पूरे गांव की खुशियां मातम में बदल दीं।

शादी वाले घर में रौनक थी। 18 साल की सीमा (बदला नाम) अपनी छोटी बहन के साथ शादी में आई थी। उसकी उम्र 18 साल की थी, लेकिन गांव के लोग उसे अभी बच्ची ही समझते थे। वह खिलखिलाती, हंसमुख और अपनी छोटी बहन से बेहद लगाव रखने वाली लड़की थी। शादी की रात करीब तीन बजे दोनों बहनें शौच के लिए घर से थोड़ी दूर खेतों की ओर निकल गईं। गांवों में अक्सर महिलाएं रात में भी साथ-साथ ही निकलती हैं, यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। लेकिन उस रात अंधेरा घना था और रास्ता सुनसान। जैसे ही दोनों बहनें आबादी से कुछ दूर उचित जगह की तलाश में आगे बढ़ीं, अंधेरे में से एक शक्ल उभरी। वह गांव का ही 17 साल का लड़का था। उसने बिना कुछ कहे सीमा का हाथ पकड़ लिया और जबरन उसे खेतों की ओर घसीटने लगा। छोटी बहन डर के मारे चीख भी नहीं पाई। उसने देखा कि उसकी दीदी को अंधेरे में ले जाया जा रहा है। कुछ देर सन्नाटे में डरी-सहमी खड़ी रहने के बाद वह दौड़ती हुई शादी वाले घर पहुंची और उसने लोगों को बताया एक लड़का दीदी को पकड़कर खेत में ले गया है।

परिजनों में हड़कंप मच गया। कुछ लोग टॉर्च लेकर उस दिशा में दौड़े, जिधर छोटी बहन ने इशारा किया था। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। 17 साल के उस आरोपी ने सीमा को खेतों के बीच एक सुनसान जगह पर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। सीमा ने विरोध किया, चीखी, लेकिन उसकी आवाज सुनसान खेतों में गुम हो गई। इसी बीच वहां गांव के ही तीन और किशोर पहुंच गए। उनकी उम्र 15 से 17 साल के बीच थी। पहला आरोपी उन्हें देखकर मौके से फरार हो गया। सीमा को लगा कि ये लोग जरूर उसकी मदद करेंगे इसलिए वह उनके सामने हाथ जोड़कर बैठ गई मानो कह रही हो कि उसे बचा लो। लेकिन ये तीनों नए शिकारी और भी खूंखार निकले। उन्होंने पहले से ही अर्धनग्न सीमा के बाकी के कपड़े भी उतार कर फेंक दिए और एक-एक कर तीनों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। बाद में पकड़े गए इन तीनों आरोपियों ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उन्होंने सीमा को घेर लिया। एक ने उसका मुंह दबाया, जबकि दो ने उसे पकड़ रखा। उन्होंने बारी-बारी से उसके साथ दुष्कर्म किया। सीमा अब तक बेहोशी की हालत में थी। लेकिन दरिंदों का खून अभी ठंडा नहीं हुआ था। उन्हें डर था कि अगर यह लड़की बच गई तो पूरे गांव में पहचान ली जाएगी। उनके नाबालिग दिमाग में यही बात कौंधी-अब इसे खत्म कर दो। तीनों ने सीमा के गले में उसी का दुपट्टा लपेटा और कसकर गांठ बांध दी। उसका दम घुटता गया और कुछ ही मिनटों में उसकी सांसें थम गईं। शव को शादी वाले घर से करीब 200-300 मीटर दूर एक सुनसान जगह पर फेंक कर तीनों फरार हो गए। रात का वक्त था, अंधेरा था, और किसी को कुछ पता नहीं चला।

शेष पृष्ठ 7 पर...

चल सकता है वयस्कों की तरह मुकदमा

रतलाम पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए 48 घंटे के भीतर चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। एसडीओपी नीलम बघेल ने बताया कि फोरेंसिक साक्ष्य और आरोपियों के बयानों के आधार पर मामला मजबूत है। अब जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड से आरोपियों की वयस्कता की जांच कराई जाएगी। यदि वे वयस्कों की तरह व्यवहार करने में सक्षम पाए जाते हैं, तो उन पर वयस्कों की तरह मुकदमा चलाने का प्रावधान है।

पहले भी घरों पर पहुंच चुकी थी शिकायतें

गांव वालों का कहना है कि इस मामले में जो चार नाबालिग पकड़े गए हैं उनमें से दो नाबालिग पहले भी गांव में बच्चियों के साथ छेड़छाड़ कर चुके है जिसकी शिकायत भी उनके घर तक कई बार पहुंची लेकिन परिवार के लोगों ने बेटों पर सख्ती दिखाने के बजाए लापरवाही दिखाई जिससे उनका साहस बढ़ कर इस रूप में सामने आया।

दूसरे तीन को कैसे पता था कि यहां क्या चल रहा है

गांव वालों के अलावा पुलिस को भी शक है कि चारों किशोर पहले से ही घात लगाकर बैठे होंगे। सीमा का हाथ पकड़कर खींचने का काम एक किशोर ने किया इसलिए उसकी छोटी बहन ने घर आकर एक लड़के की बात कही थी। पुलिस का भी मानना है कि रात के अंधेरे में तीन अन्य किशोर का वहां पहुंचना संदिग्ध है। क्योंकि अगर वह साथ नहीं थे तो उन्हें कैसे मालूम था कि इस खेत में उनका एक साथी किस तरह की वारदात को अंजाम दे रहा है।

गांव में आक्रोश, प्रशासन सतर्क

घटना के बाद पूरे गांव में तनाव है। ग्रामीणों का कहना है कि इतनी कम उम्र के लड़के इतनी बर्बरता कैसे कर सकते हैं? कई लोगों ने यह भी सवाल उठाया कि शादी के घर में इतनी रात को लड़कियां सुरक्षित क्यों नहीं थीं। पुलिस ने गांव में अतिरिक्त बल तैनात कर दिया है। एसपी रतलाम ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और जल्द ही चार्जशीट पेश कर दी जाएगी।

खेत में पड़ी नाबालिग की लाश

मां-बाप का बयान, जिसने दिल दहला दिया

सीमा की मां ने आंखों में आंसू लिए कहा, वो बस शादी में खाना खाने गई थी। छोटी बहन संग थी। कैसे सोचा था कि हमारे गांव के लड़के ही ऐसा करेंगे? उसकी तो शादी भी तय होने वाली थी। अब हम किसके आगे मुंह दिखाएं? पिता का गुस्सा फूट पड़ा- ये नाबालिग का ढकोसला नहीं चलने देंगे। बड़ी अदालत में वयस्क की तरह सजा मिलनी चाहिए।

सामाजिक सरोकारः शादी, रात्रि सुरक्षा और नाबालिग अपराध

यह घटना सिर्फ एक हादसा नहीं है। यह ग्रामीण समाज की उन खामियों को उजागर करती है, जहां महिलाओं की सुरक्षा को लेकर अक्सर लापरवाही बरती जाती है। शादी जैसे उत्सव में भी महिलाओं के लिए अलग से सुरक्षा का इंतजाम नहीं होता। दूसरी तरफ, कम उम्र में ही किशोरों में बढ़ती आक्रामकता, पोर्नोग्राफी की पहुंच और परिवार में निगरानी की कमी जैसे मुद्दे भी इस घटना से उभर कर आते हैं।

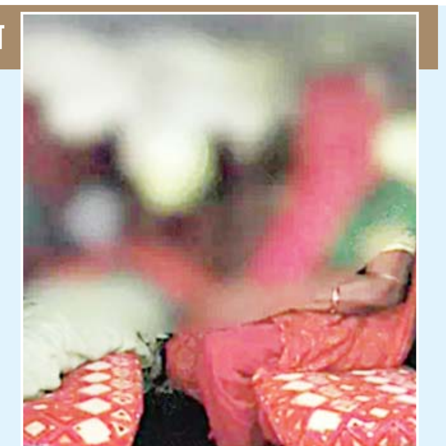

पुलिस की भूमिका और आगे की प्रक्रिया

न्याय की उम्मीद : सीमा के घर में अब मातम है। उसकी छोटी बहन, जो उस रात बच निकली, अब सदमे में है। वह बार-बार दीदी को पुकारती है, और मां-बाप उसे समझाने में असमर्थ हैं। गांव में लोग चुपचाप इस न्याय प्रक्रिया के अंत की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हर कोई यही कहता है- चाहे उम्र कितनी भी हो, इतनी दरिंदगी की सजा मौत से कम नहीं हो सकती।

निष्कर्ष- कहानी खत्म नहीं हुई : रतलाम की यह दरिंदगी एक बार फिर याद दिलाती है कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए सिर्फ कानून ही काफी नहीं, बल्कि समाज के हर तबके को संवेदनशील होना होगा। जब 15-17 साल के लड़के इतनी बेरहमी से एक लड़की के साथ वहशियाना हरकत कर सकते हैं, तो यह व्यवस्था की विफलता है। सीमा की आत्मा को तभी शांति मिलेगी, जब ये चारों दोषी अपनी सजा भुगतें। पुलिस और अदालत पर भरोसा है कि जल्द ही न्याय होगा। तब तक यह गांव, यह शादी का घर, और सीमा का परिवार उस सवाल से जूझता रहेगा- कैसे भुलाएं उस रात को?

...पृष्ठ 2 का शेष

छोटी बहन की सूचना पर परिजनों ने रात भर सीमा की तलाश की। टॉर्च लेकर लोग खेतों, नालियों, आसपास के रास्तों में भटकते रहे। सुबह करीब चार बजे उन्हें सीमा का शव मिला। गले में दुपट्टा लिपटा हुआ था, उस पर गांठ बंधी थी। चेहरा नीला पड़ चुका था। परिजनों का रोना सुनकर पूरा गांव जाग गया। जिस घर में शादी की रौनक थी, वहां मातम छा गया। दूल्हे की ओर वालों ने शादी की सारी रस्में रोक दीं। सूचना मिलते ही सरवन थाना पुलिस मौके पर पहुंची। एसडीओपी नीलम बघेल और एएसपी विवेक कुमार लाल ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत फोरेंसिक टीम बुलाई। पंचनामा कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए रतलाम मेडिकल कॉलेज भेजा गया। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में दुष्कर्म और गला घोंटकर हत्या की पुष्टि हुई। रिपोर्ट आने के बाद पुलिस ने हत्या और दुष्कर्म का केस दर्ज किया।पुलिस ने गांव में संदिग्धों की सूची बनाई। स्थानीय लोगों से पूछताछ, सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर चार नाम सामने आए। जिनमें से एक की उम्र 17 साल, तीन की 15 से 17 साल के बीच। पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने बताया कि वे शादी के घर में शामिल होने आए थे और रात में घूमते हुए उनकी नजर सीमा पर पड़ी। हालांकि पीड़िता की उम्र को लेकर थोड़ा उलझन थी। परिजन ने मेडिकल कॉलेज में उम्र 17 साल लिखवा दी थी, लेकिन जांच में सीमा की उम्र 18 साल पाई गई। इसलिए पुलिस ने पॉक्सो एक्ट की धाराएं नहीं लगाईं। आरोपी नाबालिग होने के कारण उन्हें कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें बाल सुधार गृह भेज दिया गया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

...पृष्ठ 3 का शेष

डॉक्टर की धमकी सुनकर किरण के अंदर कुछ टूट गया था। उसने तय कर लिया कि अब और नहीं। वह रिसॉर्ट तो गई, लेकिन रास्ते में उसने एक पुराने स्कूल दोस्त को फोन लगाकर पूरी कहानी बता दी। उस दोस्त ने तुरंत हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ताओं को सूचना दे दी।

बेलामोर रिसॉर्ट, पातालपानी की खूबसूरत वादियों के बीच बने इस रिजॉर्ट में डॉ. सईद ने एक कमरा बुक किया था। वह पहले ही पहुंच गया था। कुछ देर बाद किरण वहां आई। उसने डॉक्टर को कमरे में अकेले पाया। डॉ. सईद ने शराब निकाली, किरण को पीने को कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। बातों-बातों में डॉ. सईद ने फिर से उसके साथ दुष्कर्म करने की कोशिश शुरू कर दी।

इसी बीच रिसॉर्ट के बाहर हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता इकट्ठा हो गए। उन्हें पता चल गया था कि किस कमरे में डॉक्टर है। रिसॉर्ट स्टाफ ने रोकने की कोशिश की, लेकिन कार्यकर्ता अंदर घुस गए। उन्होंने कमरे का दरवाजा तोड़ा। अंदर का नजारा देखकर सबके होश उड़ गए डॉ. सईद किरण के साथ अश्लील हालत में था। कार्यकर्ताओं ने तुरंत किरण को बाहर निकाला। फिर डॉ. सईद की पिटाई शुरू हुई। लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर था। उन्होंने उसे जमकर लात-घूसों से बुरी तरह पीटा। इस बीच किसी ने पुलिस को फोन लगा दिया। बड़गोंदा थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने डॉ. सईद को कार्यकर्ताओं के चंगुल से छुड़ाया और हिरासत में ले लिया।

किरण को भी थाने ले जाया गया। पीड़िता ने पुलिस को सब कुछ बता दिया।

बड़गोंदा थाना टीआई प्रकाश वास्कले ने बताया, पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। दूसरी तरफ यह खबर जैसे ही गांव में फैली, लोगों का गुस्सा उबल पड़ा। डॉ. सईद के खिलाफ जो सुनने को मिला, उसने सबका खून खौला दिया। हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता और सैकड़ों ग्रामीण इकट्ठा हो गए। सबसे पहले वे महू के आम्बाचंदन स्थित डॉ. सईद के मकान पर पहुंचे। भीड़ ने घर के बाहर खड़ी बाइक को आग लगा दी, फिर घर में तोड़फोड़ शुरू कर दी। कुछ ही देर में आग की लपटें उठने लगीं। पड़ोसियों ने पुलिस को फोन किया, लेकिन तब तक घर का एक बड़ा हिस्सा जल चुका था।

इसके बाद भीड़ गुजरखेड़ा स्थित डॉ. सईद के क्लिनिक पर पहुंची। क्लिनिक बंद था, लेकिन भीड़ ने शटर तोड़ दिए, अंदर की दवाइयां, उपकरण, फर्नीचर सब तोड़-फोड़ डाला। कुछ लोगों ने क्लिनिक में भी आग लगा दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर भीड़ को खदेड़ा, लेकिन तब तक काफी नुकसान हो चुका था।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

...पृष्ठ 8 का शेष

पति-पत्नी का यह साथ उनके लिए सुरक्षा कवच का काम करता था। करीब डेढ़ महीने की कड़ी मशक्कत और सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज के परिश्रमपूर्वक अध्ययन के बाद पुलिस टीम को एक पैटर्न दिखा। हालांकि बाइक अलग-अलग थीं, लेकिन एक चीज कॉमन थी, घटनाओं के घंटों के अंतराल में एक ही क्षेत्र में दो लोगों का बाइक पर आना-जाना। एएसपी विदिता डागर के निर्देशन में, पुलिस ने संदिग्ध मूवमेंट को ट्रैक किया और एक दिन वारदात के दौरान ही दबिश देकर अरविंद और ज्योति को उस समय दबोच लिया जब वे एक नई वारदात की रेकी कर रहे थे। गिरफ्तारी के बाद पूछताछ में हैरान करने वाले खुलासे हुए। अरविंद रजक एक आदतन अपराधी निकला, जिसके खिलाफ पहले से ही चोरी के 56 मामले दर्ज थे। उसका आपराधिक नेटवर्क सिर्फ मध्यप्रदेश तक सीमित नहीं था, बल्कि उत्तर प्रदेश के झांसी, गुजरात के कई शहरों और मध्यप्रदेश के सीहोर, होशंगाबाद, रायसेन, भिंड और मुरैना जिलों तक फैला हुआ था। ज्योति पर भी झांसी में एक मामला दर्ज है, जो बताता है कि शादी के बाद वह भी अपने पति के इस धंधे में पूरी तरह से सक्रिय हो गई थी।

यह एक इंटरस्टेट गिरोह था, जो मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और गुजरात में सक्रिय था। वे एक राज्य में चोरी करते, माल लेकर दूसरे राज्य में चले जाते और वहां आराम से माल को खपाते। उनका यह खानाबदोश जीवन और बदलते ठिकाने उन्हें पुलिस की रडार से दूर रखते थे। उनके पास चोरी के माल को खपाने के लिए एक मजबूत नेटवर्क भी था।

गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से भारी मात्रा में चोरी का माल बरामद किया है। इसमें 105 ग्राम सोना शामिल है, जिसकी कीमत लगभग 15 लाख 75 हजार रुपये आंकी गई है। बरामद सोने में 2 सोने के हार, 2 सोने की चेन, 4 सोने की अंगूठियां, 1 सोने का पेंडल, 3 सोने की लेडीज अंगूठियां, 1 जोड़ी सोने के ब्रेसलेट और 1 सोने का सिक्का शामिल है। इसके अलावा पुलिस ने 2 लाख रुपये नकद भी बरामद किए हैं। इस तरह कुल बरामदगी की कीमत 17 लाख 75 हजार रुपये है।

पुलिस का कहना है कि इससे अधिक माल पहले ही खपाया जा चुका है। आरोपियों ने महाराजपुरा इलाके में हुई सभी 6 चोरी की वारदातों को कबूल कर लिया है। पुलिस अब यह पता लगा रही है कि वे अन्य राज्यों में कितनी वारदातों को अंजाम दे चुके हैं। आखिरकार, 'बंटी-बबली' की यह जोड़ी, जिसने तीन राज्यों की पुलिस की नाक में दम कर रखा था, अब ग्वालियर की जेल में बंद है। उनकी फिल्मी अंदाज की चोरियां अब सिर्फ पुलिस की फाइलों का हिस्सा बनकर रह गई हैं। पुलिस की इस सफलता से ग्वालियर में अपराध पर अंकुश लगाने की उम्मीद जगी है। फिलहाल, पुलिस टीम आरोपियों से पूछताछ कर उनके अन्य साथियों तक पहुंचने का प्रयास कर रही है, ताकि इस नेटवर्क की जड़ से सफाई की जा सके।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

..पृष्ठ 6 का शेष

इसलिए वह पूजा के बहाने मालती को हासिल करने की पूरी योजना बनाकर आया था।

जंगल में ले जाकर मनीराम ने एक स्थान पर पूजा करते हुए शराब की एक बोतल देवता को चढ़ाई और उस बोतल को प्रसाद के नाम पर मालती के ससुर को देकर पूजा स्थल से कुछ दूर जाकर मुंह फेर कर बैठे रहने का आदेश दिया।

प्रसाद में पूरी शराब की बोतल मिल जाने से मालती का ससुर खुश हो गया। वह थोड़ी दूर जाकर दूसरी तरफ मुंह कर बैठने के बाद मनीराम के देवता का प्रसाद ग्रहण करने लगा। ससुर के वहां से चले जाने के बाद मनीराम एक बार फिर पूजा करने का ढोंग करने लगा। पूजा करते हुए उसने मालती को जमीन पर लिटा दिया और शराब की दूसरी बोतल खोलकर उसमें कुछ मंत्र फूंके और फिर उसने में शराब अपने हाथ में लेकर उसका मालती के नंगे पेट पर चारों तरफ लेप करना शुरू कर दिया।

मालती ऐसी पूजा नहीं करवाना चाहती थी लेकिन आधी रात को घने जंगल में वह मनीराम की हरकतों का विरोध करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। कुछ देर तक मनीराम मालती के पेट पर शराब का लेप करता रहा फिर उसने प्रसाद के नाम पर मालती को एक दोने में भरकर शराब पीने को दी। मालती ने मना किया तो मनीराम ने लाल-लाल आंखे दिखाकर उसे इशारे में कहा कि अगर वह प्रसाद नहीं ग्रहण करेगी तो देवता उसके पति की जान ले लेगा। पति की मौत की बात सुनकर मालती डर गई और उसने चुपचाप शराब पी ली। यह देखकर मनीराम मन ही मन मुस्कराया और कुछ देर बाद मालती का पेट छोड़कर उसके पैरों पर घुटनों से ऊपर तक शराब का लेप करने लगा। घुटनों के बाद उसने मालती की पीठ और कंधों पर काफी देर तक शराब का लेप किया और बीच-बीच में प्रसाद के नाम पर उसे शराब पीने का देता रहा।

मालती ने कभी शराब पीना तो ठीक, शराब की बंद बोतल भी हाथ से नहीं छुई थी इसलिए थोड़ी देर में उस पर बेहोशी छा गई। यह देखकर मनीराम उठकर पहले मालती के ससुर को देखने गया। वह मनीराम के देवता का प्रसाद ग्रहण कर बेसुध पड़ा था। इसलिए जब उसने देखा कि मालती का ससुर अब सुबह तक नहीं जागेगा तो वह वापस मालती के पास आया और उसे अपने कंधे पर उठाकर वहां से दूर ले गया। इसके बाद उसने लगभग बेहोश पड़ी मालती को पूरी तरह से निर्वस्त्र कर उसके संग कई बार बलात्कार कर डाला और उसे उसी स्थिति में पड़ा छोड़कर वहां से भाग गया। इधर काफी देर बाद मालती के ससुर को शक हुई तो वह उठकर उस जगह गया जहां मनीराम पूजा कर रहा था। लेकिन वहां उसे कोई नहीं मिला तो वह यह समझकर घर वापस आ गया कि मनीराम और मालती घर चले गए होंगे।

सुबह नशा टूटने पर मालती होश में आई तो खुद को निर्वस्त्र पाकर वह सारी बात समझ गई। गांव की नई बहू होने के कारण उसने जंगल से अपने घर का रास्ता भी नहीं देखा था इसलिए कपड़े पहनकर कई घंटे जंगल में भटकने के बाद उसने घर पहुंचकर पति का पूरी बात बता दी जिसे सुनकर उसका पति उसे सीधे थाने लेकर पहुंचा और मोहनगढ़ टीआई बृजेश कुमार को पूरी बात सुनाते हुए मनीराम के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज करवा दिया। मामला गंभीर था इसलिए मनीराम के खिलाफ मामला दर्ज करने के बाद टीआई मोहनगढ़ ने तत्काल घटना की जानकारी जतारा एसडीओपी योगेन्द्र सिंह भदौरिया और टीकमगढ़ एसपी प्रशांत खरे को दे दी। जिसके बाद एसपी टीकमगढ़ से मिले निर्देश पर टीआई मोहनगढ़ इंस्पेक्टर बृजेश कुमार तत्काल अपनी टीम लेकर मनीराम की गिरफ्तारी का प्रयास करने लगे जिसके चलते मुखबिर से मिली सूचना के बाद उन्होंने घेराबंदी का उसे दबोच लिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

टीकमगढ़

इलाज के नाम पर तांत्रिक ने किया युवती से दुराचार

"बीमारी से परेशान मालती को उसके अंधविश्वासी परिजन डॉक्टर के पास ले जाने के बजाए तांत्रिक के पास ले गए थे। तांत्रिक के उपचार से मालती को कोई लाभ तो नहीं हुआ उल्टे प्रसाद के नाम पर मालती को ढेर सारी शराब पिलाकर ढोंगी तांत्रिक ने उसकी अस्मत लूट ली।

शातिर तांत्रिक

एसपी प्रशांत खरे

एक-एक दिन कर छह महीने बीत गए लेकिन मालती (बदला नाम) के पेट का दर्द नहीं गया। 22 साल की नवविवाहिता मालती चाहती थी कि पति उसे डॉक्टर के पास ले जाए। लेकिन टीकमगढ़ जिले के मोहनगढ़ थाने की बंधा चौकी की सीमा में बसे एक छोटे से गांव में रहने वाला मालती का पति उस समय तक मालती को अस्पताल नहीं ले जा सकता था जब तक कि उसके माता-पिता उसे ऐसा करने को न कहें। और जहां तक सास-ससुर की बात थी तो उन्हें अंग्रेजी दवा से ज्यादा देशी इलाज पर भरोसा था। इसलिए ऐसा भी नहीं कि ससुराल वाले उसका उपचार न कर रहे हो। लेकिन उपचार के नाम पर कभी उसके पेट पर हींग के घोल कर लेप किया जा रहा था तो कभी गुनगुने पानी में चुटकी भर हींग घोलकर पिलाई जा रही थी। गांव वालों के बताने पर दूसरे और भी कई देशी उपचार किए गए लेकिन मालती का दर्द कम होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा था।

इसी दौरान मालती के हाल-चाल जानने उसके घर आई एक पड़ोसन महिला ने मालती को देखते ही उसके ऊपर ऊपरी हवा होने की घोषणा कर देने के बाद देशी दवा छोड़कर ससुराल वाले उसे झाड-फूंक करवाने के लिए अलग-अलग चबूतरों पर ले जाने लगे। लेकिन मालती की हालत नहीं सुधरी तो मालती के ससुर के एक परिचित ने उसे चंदेरा थाना इलाके के कछिया घोड़ा गांव में रहने वाले तांत्रिक मनीराम रजक के पास मालती को ले जाने की सलाह दी। उसका कहना था कि बड़ा पुण्य है मनीराम के हाथ में। बहू को छूकर ही चंगा कर देगा।

ब्रजेश कुमार टीआई

मालती के घर वाले परेशान थे इसलिए ऐसे में अगर कोई जान पहचान का आदमी इतने भरोसे से कोई बात कहे तो उस पर भरोसा करना ही पड़ता है। लेकिन मालती दर्द से कराह नहीं थी। उसकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि पति के साथ मोटर साइकल पर बैठकर 15-25 किलोमीटर की यात्रा कर सके। इसलिए मालती के ससुर ने जब यह समस्या अपने परिचित को बताई तो उसने यह समस्या भी हल करते हुए मनीराम का मोबाइल नंबर देकर कहा हाथ जोड़कर प्रार्थना कर लेना मनीराम भला आदमी है वो खुद तुम्हारे घर आकर बहू के सिर से संकट टाल देगा। मनीराम घर आकर उपचार कर देगा, यह सुनकर शाम को ही मालती के पति से मनीराम से बात कर उसे अपनी समस्या बताते हुए उपचार के लिए गांव आने की प्रार्थना की तो मनीराम तत्काल तैयार ही नहीं हो गया बल्कि दूसरे ही दिन मालती के घर आकर उसने मालती की चोटी पकड़कर मंत्र पढ़ने का नाटक किया फिर बाहर आकर बोला समस्या बहुत बड़ी है। केवल मेरे झाड़ा से नहीं जाएगी। इसके लिए विशेष पूजा और हवन करना पड़ेगा। मालती के ससुर पूजा-पाठ में पैसा लुटाने में पीछे नहीं थे। इसलिए उन्होंने मनीराम से कहा आप चिंता न करें। जैसी भी पूजा करना चाहें आप उसके लिए हम तैयार है। तो ठीक है मैं कुछ सामान बता देता हूं। यह मंगवा लेना जिसके बाद मैं आकर बहू को पूरी तरह ठीक कर दूगा। मालती के ससुर ने मनीराम द्वारा बताया सामान लाने के जरा भी देर नहीं की और दो दिन बाद ही चार बोतल देशी शराब सहित पूजा का सारा सामान जमा कर मनीराम को खबर कर दी। जिससे अगले ही दिन 17 फरवरी की दोपहर में ही मनीराम मालती के घर पहुंच गया। पूजा आधी रात में की जाने वाली थी जिसके लिए सूरज डूबते ही पूरा घर मनीराम की देखरेख में पूजा की तैयारी में जुट गया। आधी रात को मनीराम के कहने पर मालती को ठंड़े पानी से नहलाकर गीले कपड़ों में ही मनीराम के सामने लाया गया जिसके बाद मनीराम, मालती के गीले बदन को घूरते हुए मंत्र पढ़ने का ढोंग करने लगा। मनीराम काफी देर तक मंत्र पढ़ता रहा फिर उसने हवन कुंड बनाकर घर के सभी सदस्यों को उसके जंगल से लौटकर आने तक आहुती देने को कहा और खुद मालती को विशेष पूजा के लिए अपने साथ जंगल ले जाने लगा। मालती ने अकेले उसके साथ जाने में आना-कानी की तो मनीराम ने मालती के बूढ़े ससुर को भी साथ ले लिया। वास्तव में 22 साल की बेहद खूबसूरत नवविवाहिता को देखते ही मनीराम की नीयत उस पर खराब हो चुकी थी। शेष पृष्ठ 7 पर...

पुलिस गिरफ्त में आरोपी

घटना का अंजाम देने के बाद तांत्रिक मनीराम ने गांव छोड़ दिया था लेकिन मोहनगढ़ पुलिस ने उसे जल्द ही गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

चौकन्ना था सुसर लेकिन...

वास्तव में मालती का बूढ़ा ससुर खुद भी जवान और सुंदर बहू को तांत्रिक के संग अकेले जंगल में नहीं भेजना चाहता था। इसलिए बहू द्वारा अकेले जंगल में जाने से मना करने पर वह तत्काल उसके साथ हो गया था। लेकिन मनीराम ज्यादा शातिर निकला। इसलिए उसने पहले की शराब की चार बोतल पूजा के नाम पर बुलवाई थी। जंगल में जाकर मनीराम ने पहले तो कुछ देर तक ससुर को साथ बैठाकर पूजा का नाटक किया फिर देवता को भोग के रुप में शराब की बोतल अर्पित कर प्रसाद के नाम पर मालती के ससुर को दे दी। शराब देखकर मालती का ससुर सब कुछ भूल गया और उसने धीरे-धीरे पूरी बोतल खाली कर दी जिससे वह गहरी नींद में सो गया और इस बात का फायदा उठाकर शातिर तांत्रिक मनीराम ने मालती की इज्जत लूट ली

प्रसाद के नाम पर शराब पिलाकर किया बेहोश

मनीराम काफी शातिर है। उसने तंत्र-मंत्र कर डर दिखाकर पूरे घर हो हवन करने बैठा दिया था और खुद मालती को जंगल में ले गया। जहां उसने पहले तो पूजा के नाम पर मालती के शरीर पर शराब का लेप कर उसे अपनी मर्जी से बुरे काम के लिए राजी करने की कोशिश की। लेकिन मालती खुद तो राजी हुई नहीं परंतु पूजा के दौरान प्रसाद के नाम पर बार-बार शराब पिलाए जाने के कारण वह बेहोश हो गई जिसका फायदा उठाकर मनीराम ने उसके साथ बलात्कार कर डाला।

समलैंगिक भी है तांत्रिक

मनीराम के गांव के लोगों का कहना है कि वह एक नंबर का धूर्त है। तंत्र-मंत्र के नाम पर उसने कई साल पहले गांव की एक दो महिलाओं पर डोरे डालने की कोशिश की थी। लेकिन बात खुल जाने पर गांव वालों ने न केवल उसकी पिटाई कर दी थी। गांव वालों की चर्चा के अनुसार शातिर तांत्रिक मनीराम समलैंगिक भी रह चुका है। कई लोगों का मानना है कि वो अपनी बीमारी ठीक करवाने के लिए आने वाले युवकों के संग भी गलत काम कर चुका है। जबकि खुद मनीराम खुद को निर्दोष और ऐसी बातों को कोरी अफवाह बताता है। उसका कहना है कि गांव वाले उसकी सिद्धी से जलन रखने के कारण उसे बदनाम कर रहे हैं।

महू

जांच के दौरान डॉक्टर, युवतियों के अश्लील फोटो और वीडियो बनाकर करता था ब्लैकमेल

डॉक्टर या शैतान

"आरोपी डॉक्टर सईद खान सफेद कोट में छुपा वो कामुक भेड़िया था जो इलाज के लिए आने वाली युवतियों को कभी जांच तो कभी इंजेक्शन लगाने के नाम पर पर्दे के पीछे ले जाता और ....

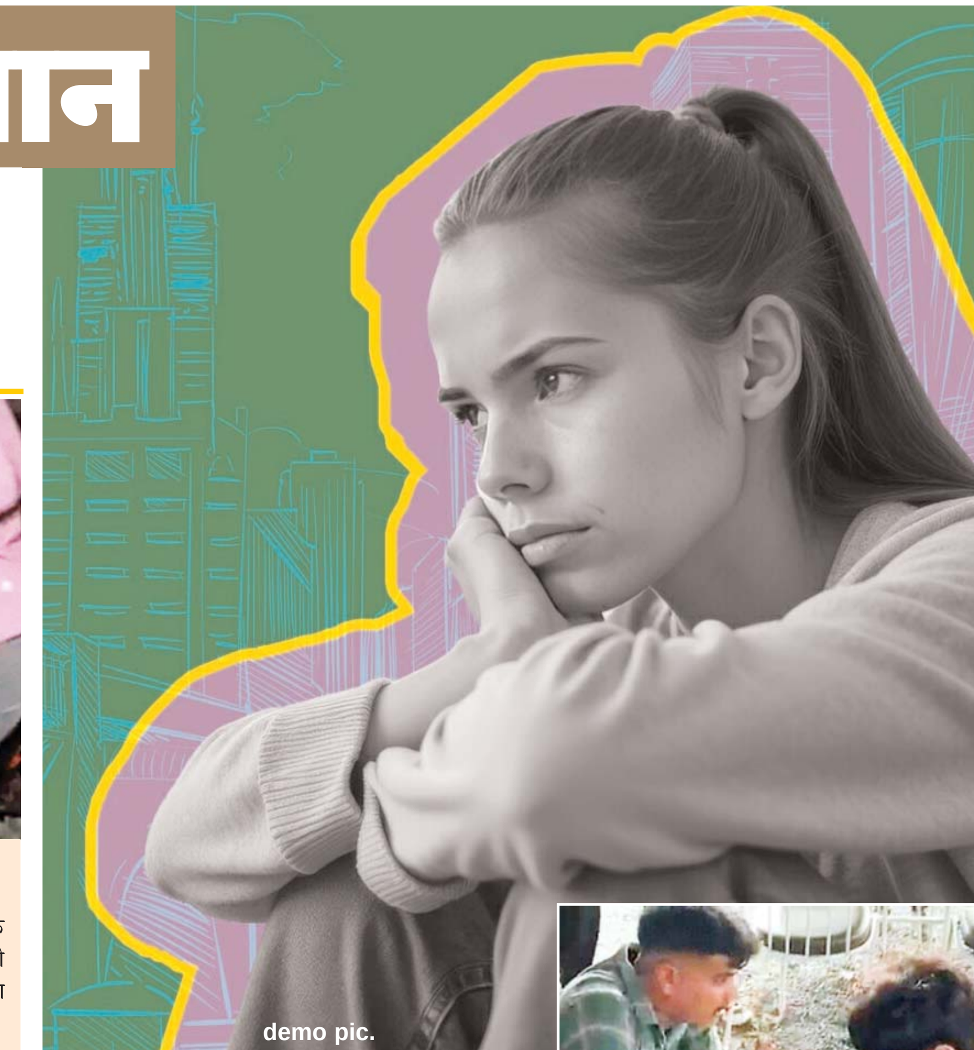

आरोपी डॉक्टर सईद खान और उसकी जली मोटर साइकल

और भी लड़कियों का किया शोषण?

पुलिस ने डॉ. सईद के मोबाइल फोन और क्लिनिक से कई सबूत जब्त किए। प्रारंभिक जांच में उसके फोन में कई अन्य महिलाओं की भी अश्लील तस्वीरें मिलने की बात सामने आई है। पुलिस अब यह भी पता लगा रही है कि क्या डॉ. सईद ने किसी और के साथ भी ऐसा अपराध किया है। इलाके में डर का माहौल है, कई महिलाओं ने चुप्पी तोड़नी शुरू कर दी है।

दिसंबर महीने की बात है। महू के गुजरखेड़ा इलाके में एक छोटा-सा क्लिनिक था-'सईद मेडिकल हॉल'। डॉ. सईद खान, करीब 35 साल का एक शख्स तो अपने मरीजों से प्यार से बात करता, गरीबों से पैसे कम लेता और कभी-कभी उनको दवाईयां भी मुफ्त में दे देता था। इसलिए लोग उसे भला डॉक्टर समझते थे। पास के गांव की रहने वाली 18 साल की किरण (बदला नामा) मध्यमवर्गीय परिवार की बेटी थी। उसके पिता छोटी-सी दुकान चलाते थे और मां घर संभालती थी। किरण को कुछ दिनों से बुखार और कमजोरी थी, तो परिजनों की सलाह पर एक रोज किरण अपनी मां के साथ क्लिनिक पहुंची। डॉ. सईद ने नर्मी से बात की, नाड़ी देखी, और बोला, बुखार तो है, लेकिन कमजोरी ज्यादा है। एक इंजेक्शन लगाना पड़ेगा, तुरंत आराम मिलेगा।

इतना कहते हुए मां को बाहर बैठा छोड़कर डॉ. सईद ने किरण को अंदर के कमरे में बुलाया, परदा लगा दिया। कुछ ही देर में सुई लगी, और किरण को लगा जैसे उसकी आंखें भारी हो रही हैं। उसने विरोध करना चाहा, लेकिन शरीर ने साथ नहीं दिया। वह बेहोश हो गई।

जब उसे होश आया, तो वह अपने घर के बिस्तर पर थी। मां ने बताया कि डॉक्टर ने कहा था इंजेक्शन का असर होगा, इसलिए सो गई थी। किरण को कुछ याद नहीं था। लेकिन उसके शरीर में दर्द था, एक अजीब सी बेचैनी थी। उसने सोचा, शायद इंजेक्शन का ही असर है।

लेकिन अगले दिन उसके मोबाइल पर एक अनजान नंबर से मैसेज आया। फोटो खोलते ही उसके होश उड़ गए। वह खुद बेहोश हालत में बिस्तर पर थी, और डॉ. सईद उसके पास था। उसके बदन पर कपड़े नहीं थे। कुछ तस्वीर तो काफी अश्लील थी जिनमें डॉक्टर उसके शरीर के कुछ हाथ स्थानों पर हाथ रखे हुए था।

कुछ ही देर बाद किरण के मोबाइल पर डॉ. सईद का फोन आया। कैसी लगी तुम्हें ये फोटो उसने जहरीली आवाज में किरण से पूछा। ये सब क्या है किरण से कुछ गुस्से में कहा तो डॉक्टर बोला यह तो कुछ भी नहीं है, अगर मेरे बुलाने पर तुम मेरे पास नहीं आई तो तुम्हारे पूरे गांव वालों को यह तस्वीरें भेज दूंगा। किरण के पैरों तले जमीन खिसक गई। उसने सोचा मां-बाप को बता दे, लेकिन शर्म और डर ने उसका मुंह बंद कर दिया। वह बस रोती रही, और उस दिन से शुरू हुआ उसके जीवन का सबसे काला दौर। डॉ. सईद ने किरण को ब्लैकमेल करना शुरू किया। पहले तो फोन पर धमकियां, फिर मिलने का दबाव। वह कहता, अगर एक बार मान जाएगी, तो सब ठीक रहेगा। मैं तेरी शादी भी करवा दूंगा। किरण ने लाख मना किया, लेकिन तस्वीरों का डर उसे झुका ले गया। वह डॉक्टर के बताए ठिकानों पर पहुंचने लगी-कभी क्लिनिक में, कभी किसी होटल में, कभी महू के सुनसान बंगलों में। हर बार डॉक्टर उसके साथ कई तरीकों से बलात्कार करता और उसकी वीडियो भी रिकार्ड कर लेता। इन्हीं फोटो और वीडियो की दम पर डॉ. सईद ने उसे बार-बार अपना शिकार बनाया। किरण ने कई बार आत्महत्या करने की भी सोची, लेकिन अपने मां-बाप का चेहरा सोचकर रुक गई। वह अंदर से खोखली होती जा रही थी।

चार महीने बीत गए। डॉ. सईद का दबदबा बढ़ता गया। वह अब खुलकर किरण को बुलाने लगा था। रविवार, 15 फरवरी 2026 को उसने फिर फोन किया, आज पातालपानी के बेलामोर रिसॉर्ट आना।

मेरी तबियत ठीक नहीं है।

तो मुझे दिखाने के बहाने आ जाओ।

मुझे नहीं दिखाना।

क्या नहीं दिखाना? अब भी कुछ बचा है क्या तुम्हारे पास जो....। सीधे से रिसोर्ट आ जाना वर्ना कल किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहने दूंगा तुम्हें। डॉक्टर ने धमकी देते हुए फोन काट दिया। शेष पृष्ठ 7 पर...

लोगों ने कहा यह लव जिहाद

घटना के बाद हिंदूवादी संगठनों ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि यह 'लव जिहाद' का एक और मामला है, जहां एक मुस्लिम डॉक्टर ने हिंदू लड़की को नशीला इंजेक्शन देकर उसकी इज्जत लूटी। वहीं, पुलिस ने स्पष्ट किया कि अभी तक इस मामले में 'लव जिहाद' जैसी कोई धारा नहीं लगाई गई है, लेकिन सभी पहलुओं से जांच की जा रही है। डॉ. सईद के परिवार ने भी बयान दिया कि उन्हें अपने बेटे के कृत्य के बारे में कुछ नहीं पता था। उनकी पत्नी ने कहा, वह हमें भी धोखा दे रहा था। हमने कभी सोचा नहीं था कि वह ऐसा कर सकता है।

लोगों ने की आरोपी की पिटाई

उमाकांत चौधरी डीएसपी

घटना के बाद लोगों ने फूंका अस्पताल, और उग्रभीड़

असम टू नर्मदापुरम वाया हैदराबाद

नर्मदापुरम का चर्चित हत्याकांड

पेज 1 से जारी

दोनों हैदराबाद के एक किराए के मकान में साथ रहने लगे। दिन के बाद अब रातें भी एक साथ कटने लगी तो शबनम और नितेश के बीच की शारीरिक दूरी भी खत्म हो गई। पति-पत्नी की तरह दोनों सुबह काम पर जाते फिर शाम को वापस आकर एक दूसरे की बाहों में सुकूल तलाशते हुए गहरी नींद में खो जाते। शबनम ने अपने परिवार को इस रिश्ते के बारे में बताया था, हालांकि शुरुआत में परिवार वाले थोड़े सशंकित थे, लेकिन बेटी की खुशी के लिए उन्होंने उसका साथ दिया।

लिव-इन एक ऐसा रिश्ता है जिसमें बंधने के बाद लड़का शादी की बात लगभग भूल जाता है। क्योंकि उसे बिना शादी के ही वह सुख मिल रहा होता है जिसके लिए कोई भी लड़का शादी करता है। लड़की की भी कहानी अलग नहीं होती उसे भी इस सुख की चाह होती ही है लेकिन वह लिव-इन के रिश्ते में आने के साथ ही शादी करने की योजना भी बनाने लगती है।

शबनम दूसरी लड़कियों से अलग नहीं थी इसलिए लिव-इन में रहते हुए शबनम ने कई बार नितेश से शादी करने की बात कही। उसकी उम्र भी अब 32 साल हो चुकी थी और परिवार वाले भी अब शादी के लिए दबाव डाल रहे थे। शबनम चाहती थी कि नितेश उससे शादी कर ले और दोनों एक औपचारिक रिश्ते में बंध जाएं। लेकिन हर बार नितेश किसी न किसी बहाने से टाल देता था। शबनम को कई बार लगा कि नितेश उससे सच्चा प्यार नहीं करता, लेकिन हर बार नितेश उसे मना लेता था। वो शबनम को झूठे वादे करके अपने पास बनाए रखता था।

> “ये कहानी केवल शबनम की नहीं है, बल्कि उन सभी महिलाओं की कहानी है जो किसी न किसी रूप में धोखे का शिकार होती हैं।

इस बीच एक ऐसी खबर आई जिसने सब कुछ बदल कर रख दिया। नितेश के परिवार वालों ने उसकी सगाई कहीं और कर दी। 13 फरवरी 2026 को नितेश की सगाई एक अन्य युवती से हो गई। ये खबर जब शबनम को लगी तो वो ठगी सी रह गई। उसे लगा जैसे उसके सपनों का महल टूट कर बिखर गया हो।

शबनम ने नितेश से सख्ती से पूछताछ की। नितेश ने पहले तो इनकार किया, लेकिन जब शबनम ने सबूत दिखाए तो उसने मान लिया। उसने शबनम को समझाने की कोशिश की कि ये सगाई परिवार के दबाव में हुई है और वो इससे बाहर निकलने का रास्ता निकालेगा। उसने यह भी कहा कि भले की उसकी शादी किसी और के साथ हो जाए लेकिन वह उसके साथ जिंदगी भर संबंध कायम रखेगा। उसकी बात सुनकर शबनम भड़क गई तो नितेश ने उसे थोड़ा सा वक्त देने की बात कहकर मना लिया। उसका कहना था कि व ह इस रिश्ते को तोड़ने का कोई रास्ता जल्द ही खोज लेगा। लेकिन शबनम को अब नितेश पर भरोसा नहीं रहा था।

नितेश की सगाई होने के बाद शबनम ने उससे शादी करने का दबाव और बढ़ा दिया। वो चाहती थी कि नितेश अपनी सगाई तोड़े और उससे शादी करे। इस बात से नितेश परेशान होने लगा। इससे उसने अपने परिवार वालों से भी बात की पर उसके परिवार वालों ने उसे साफ कह दिया था कि अब वो सगाई वाली लड़की से ही शादी करेगा। नितेश के सामने अब दो विकल्प थे या तो वो शबनम को मना ले या फिर उससे पीछा छुड़ाए।

मृतका और आरोपी एक ही कंपनी में करते थे जॉब

शबनम के लगातार दबाव और परिवार की मजबूरी के बीच नितेश ने एक खौफनाक रास्ता चुन लिया। उसने शबनम से छुटकारा पाने की साजिश रचनी शुरू कर दी। उसने अपने इस प्लान में अपने छोटे भाई सचिन यादव को भी शामिल कर लिया।

सचिन यादव नितेश से दो साल छोटा था और वो भी अपने बड़े भाई के कहने पर कुछ भी करने को तैयार रहता था। नितेश ने सचिन को शबनम के बारे में सब कुछ बता दिया और कहा कि अब इससे छुटकारा पाना जरूरी है। दोनों भाइयों ने मिलकर एक भयानक साजिश रची।

नितेश ने शबनम से कहा कि वो उसे अपने गांव ले जाएगा और वहीं उससे शादी कर लेगा। उसने झूठ बोला कि उसके परिवार वाले मान गए हैं और वो उसे बहू के रूप में स्वीकार करेंगे। शबनम, जो अभी भी नितेश से प्यार करती थी और शादी की उम्मीद लगाए बैठी थी, उसकी इस बात पर यकीन कर बैठी।

नितेश शबनम को हैदराबाद से नर्मदापुरम के माखननगर लेकर आया। रास्ते भर शबनम खुश थी कि आखिरकार उसकी शादी होने जा रही है। उसे नहीं पता था कि ये उसकी जिंदगी की आखिरी यात्रा है।

25 फरवरी 2026 की शाम को दोनों माखननगर पहुंचे। नितेश ने शबनम को सीधे गांव नहीं ले जाया, बल्कि उसे आरी गांव के एक खुले मैदान में ले गया। उसने शबनम से कहा कि वो रात में कुछ इंतजाम करेगा और सुबह शादी कर लेंगे। शबनम को अब भी किसी तरह का शक नहीं हुआ। फरवरी का महीना और नर्मदा नदी का किनारा, खुले मैदान में ठंड से शबनम कांपते हुए नितेश की बाहों की गरमी में सिमट कर सो गई। यह देखकर रात करीब 4 बजे जब अंधेरा घना था और आरी गांव के उस खुले मैदान में सन्नाटा पसरा हुआ था। नितेश ने सचिन को भी बुला लिया था। दोनों भाई अपनी साजिश को अंजाम देने के लिए तैयार थे।

सचिन के आते ही नितेश ने गोद में सिर रखकर सो रही शबनम का गला दबाना शुरू कर दिया। शबनम की नींद खुल गई और उसने संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन नितेश ने उसे कसकर पकड़ रखा था। सचिन ने उसका मुंह दबा दिया ताकि वो शोर न कर सके। दो जवान युवकों के सामने शबनम की ताकत जबाब दे गई जिसके बाद दोनों भाइयों ने मिलकर शबनम की बेरहमी से हत्या कर दी।

शबनम ने जाने कितने सपने देखे थे, जाने कितनी उम्मीदें लगाई थीं, लेकिन उसकी जान उन्हीं के हाथों गई जिस पर उसने सबसे च्यादा भरोसा किया था। हत्या के बाद नितेश और सचिन ने शव को वहीं पड़ा छोड़ दिया और कुछ देर बाद साक्ष्य छिपाने की योजना बनाने लगे।

हत्या के बाद दोनों भाईयों के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी शव को ऐसे ठिकाने लगाना जहां उसकी पहचान न हो सके। उन्हें पता था कि अगर शव मिल गया तो पुलिस जांच शुरू कर देगी और किसी न किसी तरह सच्चाई सामने आ जाएगी। दोनों ने शव को उठाया और एक बाइक पर बीच में बैठाकर ले गए। ये बेहद जोखिम भरा काम था, लेकिन वो रात के अंधेरे में शव को लेकर निकल पड़े।

नितेश और सचिन आरी गांव से लगभग 80 किलोमीटर दूर सीहोर जिले के भैरुन्दा थाना क्षेत्र के नंदगांव पहुंचे। वहां अम्बर नदी पर एक पुल था। दोनों ने पुल पर बाइक रोकी और शव को नीचे नदी में फेंक दिया। उन्हें लगा कि नदी में बहते हुए शव कहीं दूर चला जाएगा और कभी पता नहीं चलेगा।

लेकिन उनकी ये सोच गलत साबित हुई। कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। शव नदी में कहीं फंस गया और अगली सुबह ग्रामीणों ने उसे देख लिया। 26 फरवरी 2026 की सुबह जब सूरज निकला, तो नंदगांव के ग्रामीणों ने अम्बर नदी के पुल के नीचे एक युवती का शव देखा। शव की हालत काफी खराब हो चुकी थी। ग्रामीणों ने तुरंत इसकी सूचना भैरुन्दा थाना पुलिस को दी।

मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बरामद किया। शव की पहचान नहीं हो पाई क्योंकि न तो उसके पास कोई पहचान पत्र था और न ही कोई अन्य सामान। पुलिस ने अज्ञात महिला के खिलाफ मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में साफ हो गया कि मृतका की मौत गला दबाने से हुई है।

मामला हत्या का था लेकिन अगले दिन 27 फरवरी को जब कोई शव की पहचान करने वाला नहीं आया, तो पुलिस ने विधिक प्रक्रिया अपनाते हुए शव का अंतिम संस्कार कर दिया। लेकिन पुलिस ने जांच बंद नहीं की। उन्हें लग रहा था कि ये मामला किसी बड़ी साजिश का हिस्सा है।

दूसरी तरफ असम में शबनम के परिवार वाले परेशान हो गए थे। 25 फरवरी के बाद से शबनम का मोबाइल बंद आ रहा था। शुरुआत में उन्हें लगा कि कहीं नेटवर्क की समस्या होगी या फोन खराब हो गया होगा। लेकिन जब लगातार कई दिनों तक फोन नहीं लगा, तो उनकी चिंता बढ़ गई।

शबनम के पिता ने हैदराबाद में जाकर तलाश शुरू की। उन्होंने शबनम के कंपनी में संपर्क किया, लेकिन वहां भी उसकी छुट्टी बताई गई। उन्होंने शबनम के दोस्तों और सहकर्मियों से पूछताछ की। तब पता चला कि शबनम नितेश यादव के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में थी और उसके साथ कहीं गई है।

इस पर शबनम के पिता ने 7 मार्च 2026 को साइबराबाद जिले के पेट वसीराबाद थाने में बेटी की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की। उन्होंने शबनम के मोबाइल नंबर की कॉल डिटेल और लोकेशन निकाली। कॉल डिटेल से पता चला कि शबनम का आखिरी लोकेशन नर्मदापुरम जिले के माखननगर क्षेत्र का था। ये जानकारी मिलते ही पुलिस ने नर्मदापुरम पुलिस से संपर्क किया। नर्मदापुरम पुलिस को जब तेलंगाना पुलिस से ये जानकारी मिली कि एक गुमशुदा महिला का आखिरी लोकेशन उनके क्षेत्र में मिला है, तो उन्होंने तुरंत काम करना शुरू कर दिया। उन्हें याद आया कि कुछ दिन पहले ही सीहोर जिले के भैरुन्दा थाना क्षेत्र में एक अज्ञात महिला का शव मिला था।

पुलिस ने दोनों मामलों को जोड़कर देखना शुरू किया। उन्होंने भैरुन्दा पुलिस से शव का विवरण मांगा। शव की उम्र, कद, कपड़े, शारीरिक बनावट आदि का मिलान शबनम के विवरण से किया गया। काफी हद तक मिलान हो गया था। लेकिन पूरी तरह पुष्टि के लिए डीएनए टेस्ट की जरूरत थी। पुलिस ने शबनम के परिजनों से संपर्क किया और उन्हें नर्मदापुरम बुलाया। परिजनों ने शव की पहचान करने से इनकार कर दिया क्योंकि शव की हालत काफी खराब हो चुकी थी और अंतिम संस्कार हो चुका था। लेकिन परिजनों ने शबनम के कपड़ों, गहनों और अन्य व्यक्तिगत वस्तुओं के बारे में जानकारी दी। पुलिस ने ये जानकारी भैरुन्दा पुलिस से मिलाई गई जानकारी से मिलाई तो काफी हद तक मेल खा गई। 16 मार्च 2026 को डीएनए रिपोर्ट आने के बाद पुष्टि हुई कि अम्बर नदी से मिला शव शबनम का ही है।

अब पुलिस के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी हत्यारों तक पहुंचना। पुलिस ने शबनम के मोबाइल की कॉल डिटेल के आधार पर नितेश यादव की लोकेशन ट्रेस की। वो हैदराबाद से फरार हो चुका था और अपने गांव आरी में छिपा हुआ था। माखननगर पुलिस ने आरी गांव में दबिश दी। पुलिस को देखते ही नितेश और सचिन भागने की कोशिश करने लगे, लेकिन पुलिस ने उन्हें घेर लिया। दोनों को हिरासत में ले लिया गया।शुरुआत में दोनों ने पूछताछ में कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। उन्होंने पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की। लेकिन माखननगर पुलिस ने सख्ती से पूछताछ शुरू की। पुलिस ने दोनों को अलग-अलग बैठाकर पूछताछ की और उनके बयानों में विरोधाभास पकड़ा। आखिरकार, सचिन यादव ने पूछताछ में टूट गया। उसने पुलिस को पूरी वारदात कबूल कर ली। उसने बताया कि कैसे नितेश ने उसे इस साजिश में शामिल किया, कैसे दोनों ने शबनम की हत्या की और फिर शव को नदी में फेंक दिया। सचिन के कबूलनामे के बाद नितेश भी टूट गया। उसने भी अपना जुर्म कबूल कर लिया। उसने बताया कि उसने शबनम से शादी का झांसा दिया था, लेकिन असल में वो उससे छुटकारा पाना चाहता था क्योंकि उसकी सगाई कहीं और हो चुकी थी। 17 मार्च 2026 को माखननगर पुलिस ने नितेश यादव और सचिन यादव के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया। चूंकि वारदात का मूल स्थान माखननगर थाना क्षेत्र था, इसलिए जीरो पर एफआईआर दर्ज कर केस डायरी माखननगर थाने को सौंप दी गई। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

पुलिस ने घटना स्थल, शव बरामदगी स्थल और अन्य साक्ष्यों का निरीक्षण किया। आरोपियों के पास से बाइक, कपड़े और अन्य सामान भी जब्त किए गए। पुलिस ने इस मामले में धारा 103 (हत्या), 238 (साक्ष्य छिपाना) और अन्य संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज किया। दोनों आरोपियों से पूछताछ जारी है और पुलिस इस मामले में और सबूत जुटाने में जुटी है।

कथा पुलिस सुत्रों पर अधारित

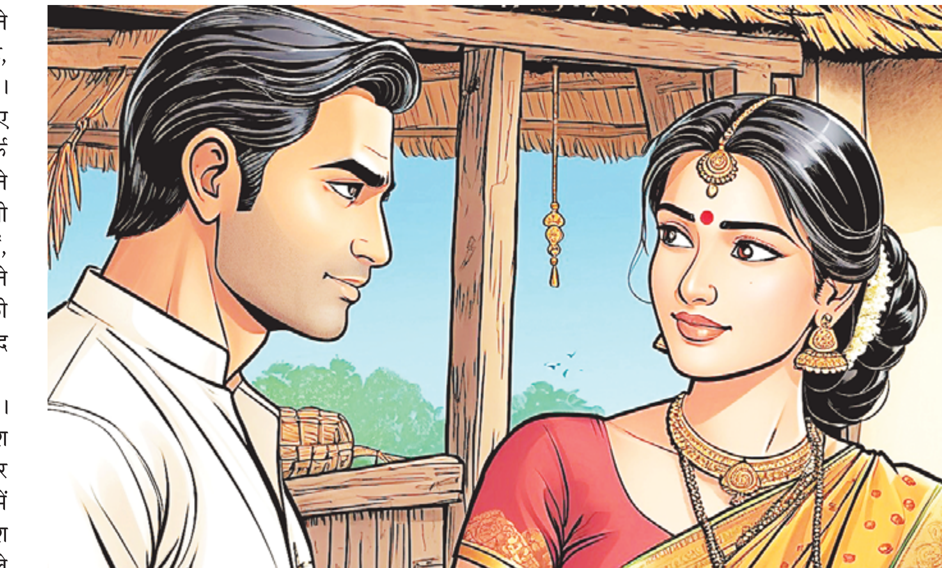

परिवार का सहारा थी शबनम

शबनम की मौत की खबर जब उसके परिवार तक पहुंची, तो मानो उन पर आसमान टूट पड़ा। उसकी मां बेहोश हो गई, पिता की हालत भी खराब हो गई। उसकी दो छोटी बहनें जिनकी पढ़ाई का खर्च शबनम उठा रही थी का आगे क्या होगा कोई नहीं जानता। पिता का कहना है कि शबनम उनके लिए बेटा थी। वह हमेशा परिवार की मदद करती थी। मैं उसे मना करता कि कुछ तुम अपने लिए भी बचा कर रखो तो वह नाराज हो जाती थी।

परिवार को नहीं मालूम थी लिव-इन की बात

जांच में सामने आया है कि शबनम ने अपने परिवार को नितेश के बारे में बता रखा था। उसके साथ शादी करने की बात भी कही थी जिसे परिवार वालों ने स्वीकार कर लिया था। लेकिन शबनम बिना शादी किए नितेश के साथ पत्नी की तरह रहती है इस बात की जानकारी परिवार को नहीं थी। शबनम के लिव-इन में रहने की बात पिता को हैदराबाद में शबनम के आफिस में काम करने वाले दूसरे साथियों से पता लगी थी।

नंदगांव की अंबर नदी में तैरता मिला मृतका का शव

नितेश को नहीं मालूम थी दोस्तों को जानकारी होने की बात

नितेश की गिरफ्तारी के बाद उसने बताया कि वह हत्या की योजना बनाकर ही शबनम को हैदराबाद से माखननगर लेकर आया था। उसका मानना था कि इतनी दूर आकर कोई शबनम की लाश को पहचानने वाला नहीं होगा। लेकिन उसे इस बात की जानकारी नही थी कि हैदराबाद से माखननगर आने से पहले खुशी से भरी शबनम ने नितेश के साथ अपनी शादी के लिए उसके गांव जाने की बात बता दी है। इसलिए जब शबनम की जानकारी लेने उसके पिता हैदराबाद पहुंचे तो शबनम की सहेलियों ने उन्हें बता दिया कि वह शादी करने के लिए नितेश के साथ उसके गांव माखननगर गई है। चूंकि शबनम के साथ नितेश का मोबाइल भी बंद था इसलिए शक के आधार पर उन्होंने हैदराबाद में अपनी बेटी की गुमशुदगी दर्ज करवा दी थी।

नहीं मालूम था अटक जाएगी लाश

आरोपी नितेश का साथ देने वाले उसके छोटे भाई सचिन ने बताया कि उन्होंने हत्या सुबह चार बजे के बाद की थी। लगभग पांच बजे वह और नितेश शव को मोटर साइकल पर बीच में रख कर ठिकाने लगाने निकले थे। सुबह का उजाला होने वाला था इसलिए हमने जल्दबाजी में लाश को भैरूंदा के पास नदी में फेंक दी थी। लाश पुल के पास ही अटक गई जबकि हमारा मानना था कि लाश नदी के साथ बह कर दूर चली जाएगी।